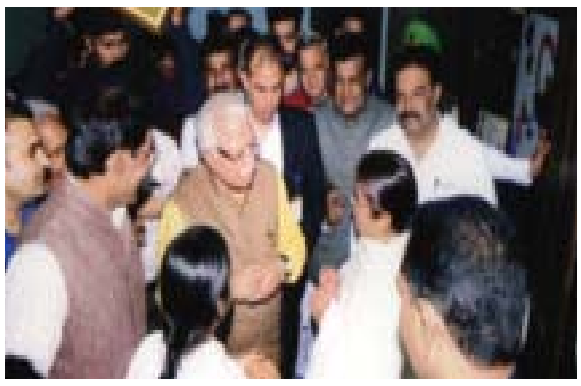

**रानियां-हरियाणा।** शहर में आने पर मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर का स्वागत करने के पश्चात् ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. कमलेश।

**पुरी-ओडिशा।** एडमिनिस्ट्रेटर्स, एक्ज़ीक्युटिव्स एंड मैनेजर्स के लिए ऑल इंडिया एडमिनिस्ट्रेटिव विंग की एन्युअल मीटिंग तथा रिट्रीट के दौरान मंचासीन हैं ब्र.कु. हुसैन बहन,ओ.आर.सी., भरत त्रिवेदी,डायरेक्टर,अतुल इनफोटेक,गुज., शैलेष भाई,सेक्रेट्री,एडमिनिस्ट्रेटर्स विंग, रमेश चन्द्र शेठी,आई.एफ.एस.,जनरल मैनेजर,फॉरेस्ट डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन भुवनेश्वर, ब्र.कु. उर्मिल,गुड़गांव, चुडामणि सेठ,आई.ए.एस.,डायरेक्टर,एलिमेन्ट्री एंड मास एज्युकेशन एंड टेक्स्ट बुक पब्लिकेशन, डॉ. देबब्रत स्वेन,आई.एफ.एस.,इंस्पेक्टर जनरल,नेशनल टाइगर कंज़रवेशन अथॉरिटी,नागपुर, ब्र.कु. वीणा,कर्नाटक, ब्र.कु. लक्ष्मी,दिल्ली,ब्र.कु. मधु,गुज. तथा ब्र.कु. प्रतिमा।

**गुमला-झारखण्ड।** प्रजापिता ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस पर ब्रह्माबाबा के गुणों की स्मृति दिलाते ई.सी.एच.एस. के प्रभारी कर्नल निलाम्बर झा। साथ हैं पूर्व सैनिक सहदेव जी तथा ब्र.कु. शांति।

**खोरधा-ओडिशा।** इन्डो तिब्बतीयन बॉर्डर पुलिस परिसर में आयोजित दो दिवसीय 'तनाव मुक्त कार्यशाला' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डेप्युटी कमांडेंट देबेन्द्र सिंह सन्धु, कमांडर शिव सिंह तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

**सम्बलपुर-ओडिशा।** ज्ञानचर्चा के पश्चात् जी.एम.,एम.सी.एल. विष्णु चरण त्रिपाठी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पार्वती।

**मण्डी-आदमपुर(हरियाणा)।** गीता जयन्ती महोत्सव के उपलक्ष्य में कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सावित्री, तहसीलदार ललित जाखड़, व्यापार मंडल के प्रधान व समाजसेवी तरसेम गोयल तथा अन्य गणमान्य जन।

# कहाँ जाना है हमें, ये हमारे निर्णय पर निर्भर

गतांक से आगे...

पूर्ण खिला हुआ चंद्रमा पूर्णमासी में कितने दिन रहता है? एक घड़ी, दूसरी घड़ी से फिर उसकी अमावस की ओर यात्रा चलने लगती है। अमावस में कितना समय रहता है। एक घड़ी, फिर पुन: उसकी पूर्णमासी की ओर यात्रा होने लगती है। ठीक इसी प्रकार आत्माओं की भी सम्पूर्ण अवस्था सतयुग में होती है। सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरूषोत्तम, श्रेष्ठ गति को प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन उस गति के बाद धीरे..धीरे...उसकी भी अमावस की तरफ यात्रा प्रारंभ होती है। अर्थात् कलियुग या मृत्युलोक तक आते हैं, लेकिन फिर वहाँ पुरुषार्थ करते हुए पुन: उस अमरलोक की ओर जाते हैं। तो परिवर्तन नित्य है। परिवर्तन हमें दिखाई नहीं देता है। ध्यान देकर देखो, तो परिवर्तन नज़र आता है। हर घड़ी हर व्यक्ति के अंदर परिवर्तन की प्रक्रिया चल रही है। इस शरीर में भी परिवर्तन हो रहा है। मनोवृत्ति में परिवर्तन हो रहा है। भावनाओं में परिवर्तन हो रहा है। परिवर्तन कहाँ नहीं हो रहा है! इसलिए कहा कि जब वो पुण्य क्षीण होने लगते हैं तो पुन: मृत्युलोक में आ जाते हैं। इस प्रकार जन्म-मृत्यु के चक्र में आते-जाते रहते हैं। कुदरत के नियम के अनुसार उसको चलना ही है। उसमें भी जो अनन्य भाव से जितना मेरे दिव्य स्वरूप का ध्यान करते हुए निरंतर मुझे याद करते हैं, नि:स्वार्थ भाव से, उसमें कोई स्वार्थ नहीं, उनकी हर आवश्यकता को मैं पूरा करता हूँ। देखो ये भगवान का वायदा है।

जैसे एक बच्चे की आवश्यकता वो खुद नहीं जानता है, लेकिन माँ-बाप को पता है कि बच्चे की आवश्यकता क्या है? उस अनुसार उसको वो चीज़ देते जाते हैं। उसके लिए लाते जाते हैं। उसको मांगने की भी ज़रूरत नहीं पड़ती है। बच्चा इस क्लास में आया तो उसको इतनी चीज़ें लगेंगी। अपने आप माँ-बाप बाज़ार में जाकर के वो चीजें ले आते हैं। बच्चा निश्चिंत है। इसी प्रकार आत्मायें भी जितना अनन्य भाव से, हृदय से उस परमात्मा के दिव्य स्वरूप को याद करते जाते हैं, उनकी आवश्यकताओं को परमात्मा पूरा करते हैं। उनकी रक्षा भी करते है। कितना सुंदर भगवान का वायदा है कि रक्षा भी मैं करता हूँ। इसीलिए तो परमात्मा को परम रक्षक कहा गया है और सर्वशक्तिवान भी कहते हैं। क्योंकि वे सर्व आवश्यकताओं को पूर्ण भी करते हैं। हरेक व्यक्ति को ये अनुभव होगा कि कैसे भगवान किस समय पर उनकी रक्षा करते हैं। उसकी महसूसता अवश्य होगी। कभी न कभी जीवन में इसका अनुभव किया होगा। उस समय ये महसूस भी हुआ होगा कि ये कोई मनुष्य ने रक्षा नहीं की, लेकिन ये परमात्मा ने आकर हमारी रक्षा की। परंतु जो मेरे वास्तविक स्वरूप को ज्ञान के आधार से नहीं जानते हैं अर्थात् परमात्मा को कोई इन चरम चक्षुओं से देख नहीं सकते। ज्ञान के दिव्य चक्षुओं से उनको समझ सकते हैं। इसलिए भगवान कहते हैं कि जो मेरे वास्तविक स्वरूप को ज्ञान के आधार से नहीं जानते हैं, अज्ञानता पूर्वक मुझे देवताओं के रूप में याद करते हैं, श्रद्धा पूर्वक उनको पूजते हैं, वह देवताओं के बीच जन्म लेते हैं। जो पित्रों को पूजते हैं वो पित्रों के पास जाते हैं। जो भूत-प्रेत की उपासना करते है, वह उन्हीं के बीच में जाते हैं। आजकल की दुनिया में अंधश्रद्धा वश कोई हमें कहाँ जाने की प्रेरणा देता है, तो कोई हमें कहाँ जाने की प्रेरणा देता है। क्योंकि भगवान का सत्य परिचय, उसके दिव्य स्वरूप का ज्ञान तो किसी के पास नहीं है। इसलिए कोई देवताओं को पूजने के लिए कहते हैं, तो कोई पित्रों को पूजने के लिए कहते हैं और कोई तंत्र-मंत्र-जंत्र के आधार पर भूत-प्रेत की पूजा भी करते हैं। उनकी गति को भगवान ने स्पष्ट किया कि जो देवताओं को पूजते हैं वो उसी घराने में जाते हैं। जो पित्रों को पूजते हैं, वो उन्हीं के पास जाते हैं। जो भूत-प्रेत की उपासना करते हैं, वह उन्हीं के पास उन्हीं के बीच में जाते हैं। अब हमें कहाँ जाना है वो हमें फाइनल करना होगा।

- क्रमश:

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

## स्व अस्तित्व की पराकाष्ठा को... - पेज 2 का शेष

तप अपने को सताना नहीं है, अपनी जीवन ऊर्जा को उसकी पराकाष्ठा पर प्रकट होने देना है। जिसकी जीवन ऊर्जा पराकाष्ठा पर प्रकट होगी, निश्चित ही उसका अंतिम परिणाम सृजन होगा, कला होगी, क्योंकि ऊर्जा तुम्हें सृष्टा बनायेगी। तुम भीतर रचो, कि मूर्ति रचो, कि चित्र बनाओ, कि तुम जो कुछ भी करोगे, उस सब में एक सोष्ठव होगा, उस सब में एक संस्कृति होगी। तुम मिट्टी छुओगे तो सोना हो जायेगी। और मिट्टी को छूकर सोना बना देने का नाम ही कला है।

जब तक स्वयं के सत्य को नहीं जाना, शील को नहीं पहचाना, अपने भीतर के केन्द्र को अनुभव नहीं किया, तब तक सब झूठ है; उसके साथ ही सब सच हो जाता है। एक को जान लो तुम, स्वयं को, तो तुम्हारे जीवन में फूल ही फूल खिल जाते हैं। इतने फूल खिल जाते हैं कि तुमने जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी, इतने गीत कि तुमने कभी सोचा भी न था, कि तुम्हारे भाग्य में होंगे। इतना आनंद, इतना नृत्य, इतनी ऊर्जा कि नृत्य तो फूटेगा ही, आनंद तो आयेगा ही, ऊर्जा तो अपने आप नाचती है। ऊर्जा बिना नाचे नहीं रह सकती। झरने फूट पड़ेंगे।

और तभी जप, या जो बैठकर राम नाम की चदरिया ओढ़े हुए और माला हाथ में लिये जप कर रहे हैं मुर्दों की भांति, इनके जप का कोई मूल्य नहीं है, लेकिन जप का अर्थ होता है; जब तुम्हारे जीवन में आनंद की पुलक आई, लहर दौड़ी और तुम्हारे भीतर अनुग्रह का भाव उठा। परमात्मा को- परमात्मा शब्द को भी बीच में ना लाओ तो भी चलेगा - अस्तित्व को जब धन्यवाद देने के लिए तुम झुके, उस झुकने का नाम ही जप है। फिर वह मौन भी हो सकता है, मुखर भी हो सकता है। उस स्वानुभूति के पहले जो ज्ञान है, कचड़ा है, किताबी है, शास्त्रीय है, उस स्वानुभव के बाद ही ज्ञान है। ज्ञान एक ही है: अपने को जानना।

अत: तप का सही अर्थों में बोध होना ही अपने आप में जाग जाना है। ना कि अपने को सताना, अपने को कष्ट देना।

## ख़्यालों के आईने में...

ज़िन्दगी बहुत कुछ सिखाती है,
कभी हँसाती है तो कभी रुलाती है; पर जो हर हाल में खुश रहते हैं, ज़िन्दगी उनके आगे सर झुकाती है।

ज़रूरत के मुताबिक ज़िन्दगी जिओ - ख्वाहिशों के मुताबिक नहीं।
क्योंकि ज़रूरत तो फकीरों की भी पूरी हो जाती है,
और ख्वाहिशें बादशाहों की भी अधूरी रह जाती हैं।